श्रम विभाग

दिनांक 31 मई, 1985

सं. ग्रो.वि./गृडगांवा/107-84/23532.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. सनराईज रवड़ इण्डस्ट्रीज, पटौदी रोड़, गुड़गांवा के श्रमिक श्री कुनमून तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधितियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादगग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मीमला है :--

क्या श्री कुनमुन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है।

सं. श्रो.वि./गुड़गांवा/107-84/23539.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं सन राईज रवड़ इण्डस्ट्रीज, पटौदी रोड, गुड़गांवा के श्रमिक श्री मेघ राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपात विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भ्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम-57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958 द्वारा उक्त भ्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रथमा संबंधित मामला है:---

क्या श्री मेघ राज की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 6 जुन, 1985

सं. म्रो.वि./फरीदाबाद/86-85/24515.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ए०के० सिन्टर्ड प्रोडक्टस प्रा. लि., 14/5 मथुरा रोड, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री भगवान मिश्रा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई म्रौद्योगिक विवाद है:—

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद का विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त या उस से सुसंगत या उस से संबंधित मामला है:---

क्या थी भगवान मिश्रा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?